चतुर्थः पाठः

CDASH2

उद्बोधनम

मा कुरु दर्पम्, मा कुरु गर्वम्

मा भव मानी, मानय सर्वम्।

मा भज दैन्यम्, मा भज शोकम्

मुदितमना भव, मोदय लोकम्।।1।।

मा वद मिथ्या, मा वद व्यर्थम्

न चल कुमार्गे, न कुर्वनर्थम्।

पाहि विपन्नम्, पालय दीनम्

लालय जननी-जनक-विहीनम्।।2।।

तनयं पाठय तनयां पाठय

शिक्षय नीतिं दोषं वारय।

कुरूपकारम्, कृत्यमुदारम्

अपनय दूरे चित्तविकारम्।।3।।

मा पिब किञ्चिद वस्तु निषिद्धम्

मा भज दुर्व्यसनं प्रतिषिद्धम्।

मा नय पलमपि व्यर्थ समयम्

कुरु जगदीश्वर-चिन्तनमभयम् ।।4।।

शब्दार्थः

मा = मत, नहीं। **कुरु** = करो। **दर्पम्** = घमण्ड (अकड़)। **गर्वम्** = अभिमान। **भव** = हो। **मानी** = अभिमान करने वाला। **मानय** = सम्मान दो। **भज** = रखो। **दैन्यम्** = दीनता। **मुदितमना** = प्रसन्न मन। **मोदय** = प्रसन्न करो। **वद** = बोलो। **मिथ्या** = झूठ। **व्यर्थम्** = बेकार। **अनर्थम्** = बुरा। **पाहि** = रक्षा करो। **विपन्नम्** = दु:खी। **लालय** = लालन-पालन करो। **विहीनम्** = रहित को। **तनयम्** = पुत्र को। **तनयां** = पुत्री को। **पाठय** = पढ़ाओ। **वारय** = दूर करो। **कृत्यम्** = कार्य। **चित्तविकारम्** = मन के दोष को। **अपनय** = हटाओ। **दुर्व्यसनम्** = खराब आदत।

अभ्यासः

1. दर्प मा कुरु। गर्व मा कुरु। मानी मा भव। सर्व मानय। दैन्यं मा भज। शोकं मा भज। मुदितमना भव। लोकं मोदय।

2. मिथ्या मा वद। व्यर्थ मा वद। कुमार्गे न चल। अनर्थ न कुरु। विपन्नं पाहि। दीनं पालय। जननी- जनकविहीनं लालय।

3. तनयं पाठय। तनयां पाठय। नीतिं शिक्षय। दोषं वारय। उदारं कृत्यम्। उपकारं कुरु। चित्तविकारं दूरे अपनय।

4. निषिद्धं किञ्चिद वस्तु मा पिब। प्रतिषिद्धम् दुर्व्यसनं मा भज। पलम् अपि समयं व्यर्थ मा नय। अभयं जगदीश्वर-चिन्तनं कुरु।

1. एकपदेन उत्तरत-

(क) कं पालय ? (ख) किं शिक्षय ?

(ग) किं अपनय ? (घ) किं मा पिब ?

2. त्याज्यकार्याणां करणीयकार्याणां च सूचीं लिखत-

त्याज्यकार्याणि करणीयकार्याणि

यथा- असत्यभाषणम् यथा- उपकारम्

....

....

....

3. चित्रानुसारं वाक्यानि रचयत-

....

....

....

....

4. पाठात् क्रियापदानि चित्वा स्वपुस्तिकायां लिखत-

यथा- कुरु ....

5. कवितां पूरयत-

(क) मा भज दैन्यम् ....।

.... लोकम्।।

(ख) ....व्यर्थम्।

.... न कुरु अनर्थम्।

(ग) .... पाठय ....पाठय।

.... कृत्यमुदारम्।

(घ) मा पिब ....।

.... प्रतिषिद्धम्।

6- विभ्क्तिं वचनं च लिखत-

लोकम्, मार्गे, तनयाम्, जगदीश्वरः

ध्यातव्यम्-

आज्ञार्थ निवेदनस्य च कृते लोट्लकारस्य प्रयोगः भवति, यथा- कुरु (करो), मा वद(मत बोलो) गच्छतु (जाओ), पठन्तु (पढ़े)।

शिक्षण-सङ्केत

1. अस्य पाठस्य पद्यानां गायनं कारयत।

2. लोट्लकारस्य (आज्ञार्थकस्य) वाक्यानाम् अभ्यासं कारयत।